

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 7, व्याख्या का इतिहास -

बेकन और कांट

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

हम हेर्मेनेयुटिक्स या बाइबिल व्याख्या पर ऐतिहासिक रूप से प्रभावों पर चर्चा कर रहे हैं, और पिछले सत्र में हम पुराने नियम में वापस चले गए ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि व्याख्या 20वीं या 21वीं सदी के विद्वानों के लिए कोई नई बात नहीं है जो बैठते हैं और बाइबिल की व्याख्या करें, लेकिन व्याख्या पुराने नियम तक ही जाती है। पुराने नियम के भीतर भी, हम बाद के लेखकों को पहले के पाठ को चुनते, लेते, व्याख्या करते और उपयोग करते हुए और उन्हें अपने दर्शकों के लिए पुनः स्थापित करते हुए पाते हैं, और हमने नए नियम के लेखकों को देखा जो पुराने नियम के पाठ की व्याख्या करते हैं। हमने रब्बीनिक यहूदी धर्म को भी देखा, और हमने पितृसत्तात्मक युग में प्रारंभिक चर्च के पिताओं को भी देखा, और बहुत संक्षेप में सुधार के लिए आगे बढ़ने को देखा, और उन सभी उदाहरणों में हमने देखा कि प्रमुख विशेषताओं में से एक यह था कि दुभाषियों ने देखा पाठ को प्रासंगिक मानें और हम पाठ को आधुनिक पाठकों के लिए प्रासंगिक बनाने का प्रयास कर रहे हैं, जरूरी नहीं कि हम उनके सभी तरीकों को दोहराना चाहते हैं, लेकिन साथ ही यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि वे भगवान के वचन को देख रहे हैं और इसे एक कलाकृति के रूप में नहीं मान रहे हैं। इसे केवल इसके ऐतिहासिक संदर्भ में व्याख्यायित और समझा जा सकता है, लेकिन वे इस बात से भी जूझ रहे हैं कि परमेश्वर का वचन किस प्रकार प्रासंगिक बना हुआ है।

इस सत्र में मैं जो करना चाहता हूँ वह थोड़ा और आगे बढ़ना है और व्याख्या पर कुछ प्रभावों को देखना है जो जरूरी नहीं कि बाइबिल पाठ की व्याख्या करने के प्रयास से उत्पन्न हों। उनमें से कुछ ऐसा करते हैं, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, कि व्याख्या शून्य में उत्पन्न नहीं होती है। आप सिर्फ बैठ कर कोई पाठ नहीं पढ़ते हैं, बल्कि जब आप ऐसा करते हैं, या अकेले पाठ पढ़ते हैं, बल्कि जब आप ऐसा करते हैं, जब आप बाइबिल पाठ की व्याख्या करने के लिए बैठते हैं, तो आप एक लंबी धारा के हिस्से के रूप में ऐसा करते हैं इतिहास

में, ऐसे व्यक्तियों की एक लंबी धारा है जिन्होंने पाठ के साथ बैठकर कुशती लड़ी है, लेकिन साथ ही आप कई अन्य व्यक्तियों की सोच और कई अन्य आंदोलनों से भी प्रभावित हैं जो हमारे समझने के तरीके, हमारे पढ़ने के तरीके, जिस तरह से प्रभावित करते हैं। हम व्याख्या करते हैं।

और फिर, उनमें से कुछ प्रभाव जो आज भी हमें प्रभावित करते हैं, उनमें से कुछ प्रभाव आवश्यक रूप से बाइबिल पाठ पर लक्षित नहीं हैं, न ही उनका उद्देश्य किसी पाठ या पुस्तकों की व्याख्या करना था। उनमें से कुछ बस इस बात पर कुशती कर रहे थे कि डेटा को कैसे समझा जाए, किसी भी चीज़ का अर्थ कैसे समझा जाए। और इसलिए मैं जो करना चाहता हूँ वह कुछ प्रमुख प्रभावों को देखना है, और फिर, हम व्यापक चित्र में एक तरह का रेखाचित्र बनाएंगे और कुछ प्रमुख व्यक्तियों और उनके प्रभाव को देखेंगे, विशेष रूप से उस समय के दौरान जिसे ज्ञानोदय के रूप में जाना जाता है। , जब किसी चीज़ को समझने के तरीके के रूप में, किसी चीज़ की व्याख्या करने के तरीके के रूप में तर्क और सोचने की क्षमता को अत्यधिक महत्व दिया जाता था, चाहे वह वैज्ञानिक डेटा हो या चाहे वह पाठ हो।

पहला व्यक्ति जिसे मैं संक्षेप में देखना चाहता हूँ वह फ्रांसिस बेकन नामक व्यक्ति है, और बेकन, एक प्रारंभिक वैज्ञानिक विचारक, एक आगमनात्मक वैज्ञानिक पद्धति आंदोलन का हिस्सा था। फ्रांसिस बेकन एक तरह से तर्कवाद का उत्पाद था, जो मानव मस्तिष्क की सोचने और तर्क करने की क्षमता पर जोर देता है, और इसलिए पाठ से अर्थ निकालने की क्षमता पर जोर देता है। बेकन ने अनुभवजन्य रूप से वैज्ञानिक डेटा के कठोर, विस्तृत अध्ययन के लिए तर्क दिया।

और इसका मतलब यह है कि दुभाषिया एक पर्यवेक्षक है जो डेटा का अध्ययन करता है और अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या अन्य प्रभावों को व्याख्या और डेटा को समझने की क्षमता को प्रभावित किए बिना जानकारी का अध्ययन करता है। पर्यवेक्षक ने डेटा को देखा और उन पूर्वाग्रहों को रास्ते में आए बिना उसका अध्ययन किया। और भौतिक और ऐतिहासिक साक्ष्यों और ऐतिहासिक तथ्यों की जांच करके, यदि कोई सही और कठोर पद्धति लागू करता है, तो उन तथ्यों को नियंत्रित करने वाले कानून स्वाभाविक रूप से सामने आएंगे और खुद को प्रकट करेंगे।

और बेकन ने जो किया वह सुझाव है कि हमें परंपरा से नाता तोड़ लेना चाहिए, और इसके बजाय हमें परंपरा पर भी संदेह करना चाहिए, और हम डेटा पर वापस लौटने में सक्षम हैं। और फिर, तथ्यों को अनुभवजन्य रूप से देखने की एक कठोर विधि से, कोई उन कानूनों को समझ सकता है जो उन तथ्यों और उन तथ्यों के अर्थ को नियंत्रित करते हैं, और वे एक साथ कैसे फिट होते हैं। आज, मुझे लगता है कि हम बाइबिल अध्ययन के भीतर कुछ आंदोलनों में एक समान प्रभाव देखते हैं जो लोकप्रिय होने के साथ-साथ कभी-कभी अकादमिक भी हैं, जो बाइबिल के आगमनात्मक अध्ययन पर जोर देते हैं।

ताकि व्याख्या के उचित तरीकों के कठोर अनुप्रयोग द्वारा, डेटा की कठोरता से जांच करके, कोई इसका सही अर्थ प्रकट कर सके, कोई इसका सही अर्थ समझ सके, पाठ अपना अर्थ प्रकट करेगा। तो फिर, आप इस तथ्य पर जोर पाते हैं कि बाइबिल का व्याख्याकार एक वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक है, और हम पाठ में डेटा को देखते हैं, हम बस तथ्यों को देखते हैं, और अनुभवजन्य रूप से निरीक्षण करते हैं कि वहां क्या है, और एक कठोर आवेदन करके मानवीय तर्क और सोच का उपयोग करके, हम इसका अर्थ निकाल सकते हैं, और हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि पाठ क्या कह रहा है। और इसलिए, ऐसा करने से, हम सक्षम हो जाते हैं, हम पाठ के सही अर्थ तक पहुंचने के लिए, अपने पूर्वाग्रहों, अपनी पूर्वधारणाओं, अपनी पिछली परंपराओं और इस तरह की चीजों से खुद को दूर करने में सक्षम हो जाते हैं।

और फिर, कई व्याख्यात्मक ग्रंथ अभी भी व्याख्या की आगमनात्मक पद्धति के बारे में बात करते हैं, और फिर, और भी अधिक लोकप्रिय बाइबिल अध्ययन हैं जिन्हें आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन या ऐसा कुछ कहा जाता है। और फिर, धारणा यह है कि, मैं एक वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक हूँ, मैं एक सूखे स्पंज की तरह हूँ जो डेटा को सोखने की प्रतीक्षा कर रहा है, और बाइबिल पाठ में व्याख्या के सही तरीकों को लागू करके, मैं इसका सही अर्थ प्राप्त कर सकता हूँ, बिना किसी बोझ के और मेरे पूर्वाग्रहों से अप्रभावित। इसलिए फ्रांसिस बेकन एक महत्वपूर्ण विचारक थे, जो अप्रत्यक्ष रूप से बाइबिल के व्याख्याशास्त्र को प्रभावित करने में इतना अधिक नहीं था, बल्कि इस पूरे दृष्टिकोण के एक भाग के रूप में, इस दृष्टिकोण का एक उदाहरण था, कि कोई भी,

व्याख्या की एक कठोर पद्धति को लागू करके, अपने से आगे निकल सकता है या अपने पूर्वाग्रहों पर काबू पा सकता है, और डेटा को शुद्ध, अनुभवजन्य, आगमनात्मक प्रकार की विधि से समझें।

अगले विचारक जिससे मैं आपका परिचय कराना चाहता हूँ वह रेने डेसकार्टेस नाम का एक व्यक्ति है। और रेने डेसकार्टेस, 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 17वीं शताब्दी के मध्य तक, 1596 से 1650 तक। बेकन की तरह डेसकार्टेस भी एक प्रकार से तर्कवाद का उत्पाद थे, और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ज्ञान तार्किक तर्क से आता है।

अर्थात् मानव मस्तिष्क अर्थ निकालने में सक्षम है। डेसकार्टेस ने कहा कि मैं एक तर्कसंगत सोच वाला व्यक्ति हूँ। इसलिए, मैं डेटा को देख सकता हूँ, मैं भौतिक दुनिया को देख सकता हूँ, और मैं इसे तार्किक रूप से समझ सकता हूँ।

डेसकार्टेस ने भी संदेह की स्थिति से काम किया। अर्थात्, वैज्ञानिकों या दार्शनिकों को स्वयं को पूर्वकल्पित धारणाओं और पूर्वकल्पित विचारों और परंपरा से मुक्त करना होगा। उन्हें परंपरा को खत्म करना होगा और अपने पूर्वाग्रहों और अपनी धारणाओं को अलग रखना होगा, और डेटा की व्याख्या करते समय उन्हें नए सिरे से शुरुआत करनी होगी।

अब, बेकन और डेसकार्टेस ने इस धारणा के साथ काम किया कि जानने और वास्तविकता के बीच मोटे तौर पर एक संबंध है, या एक सहसंबंध है। अर्थात्, तर्कसंगत, अनुभवजन्य, वैज्ञानिक पद्धति किसी चीज़ को वैसे ही समझ सकती है जैसे वह वास्तव में है। तो मेरे जानने और किसी चीज़ की व्याख्या करने और यह वास्तव में क्या है, के बीच एक संबंध है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, जब मैं इस पुस्तक का अवलोकन करता हूँ, जब मैं इस पुस्तक को देखता हूँ, जो मैं देखता हूँ और देखता हूँ, मेरे जानने और मेरे अवलोकन के बीच एक पत्राचार होता है, और जो वास्तव में वहां है, वह वास्तविक वास्तविकता है। तो फिर, कठोर वैज्ञानिक पद्धति को लागू करके, हम तटस्थ पर्यवेक्षक बन सकते हैं। डेटा के लिए आगमनात्मक दृष्टिकोण

लागू करके, तर्कसंगत आगमनात्मक विधि के साथ समझ तक पहुंचकर, हम इसे शुद्ध तरीके से देख सकते हैं, और हम किसी चीज़ को वैसे ही समझ सकते हैं जैसे वह वास्तव में है।

और फिर, व्याख्याशास्त्र के दृष्टिकोण पर संभावित प्रभाव को देखना बहुत कठिन नहीं है। जब बाइबल की व्याख्या करने की बात आती है, तो कोई इसे इस पद्धति के अनुसार देख सकता है, और इस प्रभाव के तहत, कोई इसे एक वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक के रूप में देख सकता है, कोई इसे तटस्थ तरीके से देख सकता है, और फिर सही के कठोर अनुप्रयोग के माध्यम से भी। व्याख्या के तरीकों, व्याख्याशास्त्र की कठोर पद्धति के माध्यम से, कोई ऐसी व्याख्या पर पहुंच सकता है जो वास्तव में पवित्रशास्त्र के पाठ से मेल खाती है। यानी, मैं एक व्याख्या पर पहुंच सकता हूं, मैं एक समझ पर पहुंच सकता हूं, मैं पाठ के अर्थ पर पहुंच सकता हूं, जो सीधे तौर पर पाठ में जो कुछ है उससे संबंधित है।

फिर से, अपने पूर्वाग्रहों, अपने दृष्टिकोण, अपनी परंपरा और अपने दृष्टिकोण से अलग हो गया। कठोर विधि अपनाकर मैं एक तटस्थ पर्यवेक्षक बन सकता हूँ। फिर, एक स्पंज की तरह जो डेटा सोखने का इंतज़ार कर रहा है।

इसलिए जब व्याख्याशास्त्र की बात आती है, तो कम से कम बेकन और डेसकार्टेस द्वारा प्रस्तुत तर्कवाद की पद्धति और दृष्टिकोण व्याख्या में प्रभावशाली रहे हैं। तो फिर, यदि आपने सुना है या आपको सिखाया गया है या आपने पढ़ा है कि हेर्मेनेयुटिक्स के लिए सही दृष्टिकोण स्वयं को अपनी पूर्वधारणाओं और पूर्वाग्रहों से मुक्त करना है, पाठ को निष्पक्ष रूप से देखना है, और व्याख्या के सही तरीकों को लागू करना है, आप अपने पूर्वाग्रहों पर काबू पा सकते हैं, आप पाठ का सही अर्थ समझ सकते हैं। इस प्रकार का अधिकांश दृष्टिकोण तर्कवाद के इस काल से उत्पन्न होता है, जिसका उदाहरण बेकन और डेसकार्टेस के दृष्टिकोण से मिलता है।

और इन दोनों व्यक्तियों के बारे में हम और भी बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन जब व्याख्याशास्त्र की बात आती है तो मैं मुख्य रूप से उस विरासत पर जोर दे रहा हूँ जो उन्होंने छोड़ी है। डेसकार्टेस के बारे में कहने के लिए कुछ अन्य बातें भी हैं, जहां तक उनकी विरासत

और यहां तक कि बाइबिल की व्याख्या पर भी उनके प्रभाव का सवाल है, तो डेसकार्टेस ने एक द्वैतवाद भी पेश किया जो बाद में व्याख्याशास्त्र और व्याख्या में बहुत महत्वपूर्ण हो जाएगा। और धर्मशास्त्र और मूलतः, उन्होंने कहा, द्वैतवाद इस प्रकार चला गया।

एक ओर, डेसकार्टेस ने समझा कि एक भौतिक संसार है जो यंत्रवत है, यह प्राकृतिक नियमों से चलता है। दूसरी ओर, यह नियतिवादी है। लेकिन दूसरी ओर, डेसकार्टेस ने विचारक की, तर्कसंगत विचारक की स्वतंत्रता और स्वायत्तता को बरकरार रखा।

और इसका मतलब यह है कि, अगर मैं एक तर्कसंगत सोच वाला व्यक्ति हूँ, एक स्वायत्त सोच वाला व्यक्ति हूँ, तो इससे यह सवाल उठता है कि मेरी समझ किस हद तक मेरी अपनी व्याख्या, या मेरे अपने दृष्टिकोण और मेरे अपने दृष्टिकोण पर निर्भर है? मानव मस्तिष्क किस हद तक यह निर्धारित करता है कि मैं डेटा को कैसे समझूंगा? तो डेसकार्टेस पहले से ही वह प्रश्न उठा रहा है। और एक चीज़ जो हम देखने जा रहे हैं, यह दृष्टिकोण, इमैनुएल कांट, उन आंकड़ों में से एक जिन्हें हम बस एक क्षण में देखेंगे, इमैनुएल कांट इसे और भी विकसित करेंगे और व्याख्या के लिए आधुनिक दृष्टिकोण के लिए भी मार्ग प्रशस्त करना शुरू करेंगे। अब मुख्य रूप से पाठक पर ध्यान केंद्रित करें। यह पाठक ही है जो अर्थ निर्धारित करता है, कि पाठ में कोई सही अर्थ नहीं है।

लेकिन हम अपनी समझ, अपनी सोच, अपने पूर्वाग्रहों, अपनी परंपराओं, अपने दृष्टिकोण से इतने प्रभावित हैं कि हम निस्संदेह उसे पाठ में पढ़ेंगे। तो डेसकार्टेस ने यंत्रवत ब्रह्मांड के बीच अपने द्वैतवाद द्वारा पहले से ही इसके लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया है, लेकिन स्वायत्त सोच स्वयं, जो फिर से सवाल उठाती है, फिर किस हद तक मेरा दिमाग यह निर्धारित करता है कि मैं क्या देखता हूँ, और मेरा दृष्टिकोण यह निर्धारित करता है कि मैं क्या देखता हूँ और अनुभव करता हूँ डेटा में? इस अवधि के दौरान जोर देने के लिए एक और आंकड़ा, और ऐसे कई अन्य व्यक्ति हैं जिन पर हम गौर कर सकते हैं जिन्होंने शायद हेर्मेनेयुटिक्स को प्रभावित किया है, एक जिसका उल्लेख हम एक क्षण में बहुत संक्षेप में करेंगे वह है संदेहवाद, डेविड ह्यूम का संदेहवाद, वह एक है कुछ पता नहीं चल सका। लेकिन एक व्यक्ति पर जोर देना जरूरी है, क्योंकि हम अक्सर

बाइबिल की व्याख्या या हेर्मेनेयुटिक्स की पाठ्यपुस्तकों में भी ऐसे बयान पाते हैं जो इस प्रकार की सोच को दर्शाते हैं, लेकिन एक व्यक्ति जिसका बहुत संक्षेप में उल्लेख किया जाना चाहिए वह है जॉन लॉक, लॉक, जॉन लॉक, 1632 से 1704।

लॉक ने तर्क दिया कि मन एक कोरी गोली है और यह बाहरी दुनिया से संवेदनाएँ प्राप्त करता है। तो मेरा दिमाग एक खाली स्लेट है जो बाहरी दुनिया में अनुभवजन्य दुनिया से संवेदनाएं और डेटा प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा है। और एक बार फिर, मैंने अनगिनत व्याख्यात्मक पाठ्यपुस्तकें देखी हैं, विशेष रूप से पहले, जिसमें कहा गया था कि दुभाषिया, जैसा कि बेकन ने कहा था, एक विशुद्ध वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक के रूप में पाठ पर आ सकता है, खाली दिमाग के साथ, दिमाग एक खाली स्लेट है, एक स्पंज की तरह, बस विशुद्ध रूप से आगमनात्मक और विशुद्ध रूप से वस्तुनिष्ठ तरीके से डेटा को सोखने की प्रतीक्षा कर रहा है।

हालाँकि हम देखेंगे कि लॉक की स्थिति के साथ कठिनाइयों में से एक है, और हम इसे बाद में कुछ अन्य व्याख्याकारों और अन्य व्याख्याकारों में देखेंगे, यह शब्द उस व्यक्ति के लिए उपयोग किया जाता है जो व्याख्याशास्त्र को लागू करता है या इसके बारे में सोचता है और लिखता है, लेकिन यह आलोचनाओं में से एक है यदि मेरा दिमाग एक कोरी स्लेट है और यदि यह महज़ एक कोरी गोली है, तो मैं कुछ भी कैसे समझ सकता हूँ? किसी के पास देखने और समझने के लिए कुछ श्रेणियाँ या कुछ परिप्रेक्ष्य होना चाहिए। लेकिन लॉक से आगे बढ़ते हुए, अगला महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण व्यक्ति, शायद उन सभी व्यक्तियों के समूह में सबसे महत्वपूर्ण, जिन्हें हम देख रहे हैं, इमैनुएल कांट नाम का एक व्यक्ति है। इमैनुएल कांट, जो 1724 से 1804 तक जीवित रहे, मूल रूप से कुछ मामलों में अपने समय के संदेह का जवाब दे रहे थे।

फिर, जिन संशयवादियों को उन्होंने जवाब दिया उनमें से एक डेविड ह्यूम थे, जिन्होंने किसी भी मानवीय ज्ञान की निश्चितता पर संदेह किया था। और इसके जवाब में, कांट ने इस संदेह से बचने की कोशिश की। और उन्होंने जो किया वह यह है कि मूल रूप से, मानव मन जानने का अंतिम स्रोत है।

दूसरे शब्दों में, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता, हालांकि, कांट के अनुसार, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को केवल तभी जाना और माना जा सकता है जब यह मन की जानने वाली संरचनाओं के अनुरूप हो। इसलिए, वह डेसकार्टेस से भी आगे चला जाता है। याद रखें, डेसकार्टेस ने एक तरह से स्वायत्त सोच वाले स्वयं के बीच द्वैतवाद की शुरुआत की थी जो डेटा को तर्कसंगत रूप से समझने और अनुभव करने में सक्षम था।

अब, कांट आगे बढ़ता है और कहता है, वस्तुनिष्ठ वास्तविकता, जो बाहर है उसे केवल उन श्रेणियों के कारण ही जाना जा सकता है जो पहले से ही मन में मौजूद हैं, उन संरचनाओं के कारण जो पहले से ही मन में मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, चीज़ें अपने आप में कैसी हैं, चीज़ें वस्तुपरक रूप से कैसी हैं, यह कभी नहीं जाना जा सकता। इसके बजाय, मेरी सारी जानकारी मन की संरचनाओं और मानव मन में समझ की श्रेणियों के माध्यम से फ़िल्टर की जाती है, जैसे समय की श्रेणियां जो हमें समय को अलग करने की अनुमति देती हैं, स्थान की श्रेणियां, ये सभी निर्धारित करती हैं कि हम अनुभवजन्य दुनिया को कैसे देखते हैं।

तो फिर, बेकन और डेसकार्टेस के अनुसार, शायद कोई किसी वस्तु को देख सकता है और हम इसे कैसे देखते हैं और हम इसे कैसे समझते हैं, मेरी समझ और जानने और वस्तु की प्रकृति के बीच सीधा संबंध होगा। अब, कांट कहते हैं कि इसके बजाय, मन, मन की संरचनाएं यह निर्धारित करती हैं कि मैं क्या देखता हूं। इसलिए मैं इस पुस्तक को कैसे देखता और समझता हूं, मैं निश्चित नहीं हो सकता कि मैं इसे वस्तुनिष्ठ रूप से समझता हूं, या जैसा कि यह वास्तव में है, क्योंकि यह सोच और तर्कसंगत दिमाग की श्रेणियां और संरचनाएं हैं जो यह निर्धारित करती हैं कि मैं इसे कैसे समझता हूं।

तो इसके बारे में मेरी समझ समझ के पैटर्न, मानव मन में पहले से मौजूद श्रेणियों के माध्यम से फ़िल्टर की जाती है। और फिर, पहले, बेकन के अनुसार, विशेष रूप से डेसकार्टेस में, मस्तिष्क वस्तुनिष्ठ रूप से डेटा को वैसे ही समझ सकता था जैसा वह वास्तव में था। लेकिन अब कांट कहते हैं, नहीं, मन, मन की संरचनाएं यह निर्धारित करती हैं कि मैं दुनिया को कैसे देखता हूं और दुनिया को कैसे देखता हूं।

मन की संरचनाएँ यह निर्धारित करती हैं कि दुनिया की व्याख्या कैसे की जाती है। मेरी जानकारी और वास्तव में वहाँ क्या है, के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। मैं निश्चित नहीं हो सकता कि जो कुछ मैं जानता हूँ वह आवश्यक रूप से वहाँ मौजूद चीज़ों से वस्तुनिष्ठ रूप से मेल खाता है।

इमैनुएल कांट का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव भी है। और वह यह है कि, इमैनुएल कांट ने कहा कि दो ध्रुव थे, शायद फिर से, डेसकार्टेस की सोच को थोड़ा आगे ले जाते हुए, स्वतंत्रता और कारणता के बीच एक द्वैतवाद था, या फिर, सोचने वाले दिमाग की स्वतंत्रता, और कारणता, यही नियतिवाद है कि दुनिया के काम करने के तरीके पर शासन किया। और कांट के लिए, स्वतंत्रता के ध्रुव में आस्था, धर्म और ईश्वर जैसी चीज़ें शामिल थीं।

जबकि कार्य-कारण का ध्रुव, ध्रुव का विपरीत पक्ष समय और स्थान और इतिहास की वैज्ञानिक दुनिया थी। और कांट के अनुसार, कोई भी एक-दूसरे को प्रभावित नहीं कर सकता। जब विज्ञान, इतिहास और बाहरी दुनिया की बात आती है तो वैज्ञानिक जांच के तरीकों के अनुसार कोई भी आस्था, ईश्वर और धर्म को नहीं समझ पाता है।

तो, फिर से, इतिहास और इस नियतिवादी दुनिया के बीच यह द्वैतवाद है, और फिर स्वतंत्रता का ध्रुव, जिसमें ईश्वर और आस्था और धर्म शामिल हैं। दरअसल, आज हम इस प्रभाव को कई मोर्चों पर देख रहे हैं। उदाहरण के लिए, यह धारणा कि आस्था, मेरा विश्वास और धर्म एक बहुत ही व्यक्तिगत चीज़ है।

ईश्वर में मेरी आस्था सर्वोत्कृष्ट है और तथ्यों से स्वतंत्र भी है। जबकि इतिहास और विज्ञान केवल कारण और प्रभाव का क्षेत्र हैं, यानी, अधिकांश के लिए, इसका मतलब इतिहास में कोई चमत्कार, कोई दैवीय हस्तक्षेप नहीं होगा। फिर उन दोनों ध्रुवों को अलग-अलग रखा।

कोई भी वैज्ञानिक तथ्य और ऐतिहासिक तथ्य को धार्मिक विचारों, ईश्वर और आस्था के दायरे के साथ नहीं मिला सकता है। और फिर, हम देखते हैं कि आज, फिर से, ईश्वर में आस्था और विश्वास

कुछ ऐसी चीज़ है जो व्यक्तिगत है, कुछ ऐसा है जो तथ्यों पर निर्भर नहीं है, कुछ ऐसा है जिसे साबित नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, हम यह भी देखते हैं, मुझे लगता है, हम अभी भी पुराने टेस्टामेंट और नए टेस्टामेंट दोनों अध्ययनों में इस तरह की सोच की विरासत को उस द्वंद्व में देखते हैं जिसे आप अभी भी अक्सर विश्वास और इतिहास के बीच देखते हैं, विशेष रूप से जो 19वीं और 19वीं सदी के उदारवाद की विशेषता है। 20 वीं सदी।

और इससे भी आगे, धर्मशास्त्र और इतिहास का विच्छेदन। उदाहरण के लिए, पुराने नियम के लेखक यह लिख रहे हैं कि धार्मिक साहित्य क्या है, धार्मिक साहित्य क्या है, न कि ऐतिहासिक क्या है। और इसलिए ऐसी बातें जैसे कि ईश्वर ने लाल सागर को विभाजित कर दिया ताकि एक संपूर्ण राष्ट्र चल सके, निश्चित रूप से सच नहीं हो सकता और निश्चित रूप से ऐसा नहीं हो सकता था।

लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि लेखक की रुचि धर्मशास्त्र में है, इतिहास में नहीं। या सिनॉट्रिक गॉस्पेल, मैथ्यू, मार्क और ल्यूक, जब वे धर्मशास्त्र लिख रहे हैं, तो वे आवश्यक रूप से इतिहास नहीं लिख रहे हैं। तो आप आस्था और इतिहास के बीच इस द्वंद्व में, या फिर, सुसमाचार की आलोचना में, या पुराने नियम की आलोचना में, धर्मशास्त्र और इतिहास के बीच द्वंद्व में कांट के एक अर्थ में चल रहे प्रभाव को देखते हैं।

यदि लेखक धार्मिक दस्तावेज़ लिख रहे हैं, तो निश्चित रूप से उन्हें ऐतिहासिक तथ्यों या इतिहास लिखने में कोई दिलचस्पी नहीं है। तो कांट के लिए, कांट ने कहा कि ज्ञान तब पाठ से संवेदी छापों के आधार पर अनुभव से बना होता है, जिसे दूसरे को मन की श्रेणियों के माध्यम से समझा जाता है जो मुझे डेटा को व्यवस्थित करने और दुनिया की व्याख्या करने में सक्षम बनाता है। और फिर, कांट के तनाव का मुख्य बिंदु यह है कि, बेकन और डेसकार्टेस के विपरीत, उन्होंने सुझाव दिया कि हम कभी भी किसी चीज़ को स्वतंत्र रूप से नहीं जान सकते, हम कभी भी किसी चीज़ को उस रूप में नहीं जान सकते जैसा वह वास्तव में है।

फिर, मैं इसे उस रूप में नहीं जान सकता जैसा यह वास्तव में है। लेकिन इसके बजाय, मैं इसे केवल अपने दिमाग के ग्रिड के माध्यम से, उन संरचनाओं के माध्यम से जान सकता हूँ जो पहले से ही मेरे दिमाग में मौजूद हैं। सभी अर्थ और समझ इस ग्रिड के माध्यम से फ़िल्टर किए जाते हैं।

लेकिन यह ग्रिड ही है जो मुझे समझने में सक्षम बनाता है। और यह एक स्वायत्त विचारक, एक स्वायत्त विचारक होने का परिणाम है। इसलिए मैं, सोचने वाला स्वयं, यह निर्धारित करता हूँ कि मैं चीजों को कैसे देखता हूँ।

हम चीजों को जानते हैं, वे हमें कैसी दिखाई देती हैं, जरूरी नहीं कि वे वस्तुनिष्ठ रूप से और वास्तविकता में और स्वयं में कैसी हैं। इसलिए, एक लिहाज से, इस तरह से विचार करने पर, कांट कभी भी उस संदेह से पूरी तरह बच नहीं पाए जिसका वह जवाब दे रहे थे। क्योंकि आप इसके बारे में सोचते हैं, अगर मैं किसी चीज़ को उस रूप में नहीं जान सकता जैसा वह वास्तव में है, अगर किसी चीज़ के बारे में मेरी धारणा और ज्ञान उस चीज़ के वास्तविक स्वरूप से स्वतंत्र है, अगर मेरे जानने और किसी चीज़ के होने के तरीके के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है, तो मैं ऐसा कर सकता हूँ। तब मैं निश्चित नहीं हो पाऊँगा कि मैं किसी चीज़ को वैसे ही जानता हूँ जैसे वह वास्तव में है।

और इसलिए उस संबंध में, कांट उस संदेह से पूरी तरह बच नहीं पाए जिसका वह जवाब दे रहे थे। और फिर, जब प्रकृति, दुनिया, इतिहास, वैज्ञानिक ज्ञान की बात आती है, तो कोई अलौकिक नहीं हो सकता। फिर, धर्म, ईश्वर, आदि।

एक अलग ध्रुव, स्वतंत्रता के ध्रुव से संबंधित हैं, जबकि विज्ञान, इतिहास, आदि एक बंद यंत्रवत ब्रह्मांड से संबंधित हैं। और बेकन और डेसकार्टेस की तरह, हालांकि, कांट ने अभी भी अर्थ और ज्ञान के प्राथमिक स्रोत के रूप में मानव मन पर जोर दिया।

यह स्वायत्त सोच वाले स्वयं के माध्यम से है, स्वायत्त सोच वाला स्वयं जानने और समझने में सक्षम है। हालाँकि, जैसा कि हमने कहा, कांट के साथ, कोई केवल मन की ग्रिड के माध्यम से ही जान

सकता है, उन श्रेणियों को जो पहले से ही मन में हैं। और इसलिए, मैं किसी चीज़ को उस रूप में नहीं जान सकता जैसा वह वास्तव में है, बल्कि केवल उसी रूप में जान सकता हूँ जैसा मैं उसे समझता और अनुभव करता हूँ।

और इसलिए इमैनुएल कांट की विरासत यह है कि दुभाषिया अर्थ का केंद्र है। व्याख्याकार, जानने वाला स्वयं, अर्थ का केंद्र है। और जैसा कि मैंने पहले ही कहा, कांट अनुमान लगाना शुरू कर देता है, कांट, एक अर्थ में, व्याख्याशास्त्र के अधिक आधुनिक दृष्टिकोण का अनुमान लगाता है जो पाठक, पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण पर जोर देता है।

इस पाठ्यक्रम की शुरुआत में, मुझे लगता है कि हमने उल्लेख किया था कि हेर्मेनेयुटिक्स व्याख्या के तीन प्राथमिक घटकों के माध्यम से और उनके आसपास केंद्रित प्रतीत होता है। वह लेखक, पाठ और पाठक है। लेखक-केंद्रित दृष्टिकोण जो लेखक के इरादे पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

पाठ-केंद्रित जो पाठ पर स्थान, अर्थ के स्थान के रूप में ध्यान केंद्रित करता है। और पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण जो पाठ को समझने वाले पाठक पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और इसलिए पहले से ही, कांट व्याख्या के लिए अधिक उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण और अधिक पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण की आशा कर रहा है जो उस पाठक पर ध्यान केंद्रित करता है जो पाठ को समझता है।

अर्थात् अर्थ देखने वाले की नजर में होता है। पाठ में कोई सही, वस्तुनिष्ठ अर्थ नहीं है जिसे हम केवल अमूर्त कर देते हैं। लेकिन इसके बजाय, एकमात्र अर्थ वही है जो लेखक, पाठक, मन की श्रेणियों के माध्यम से, पूर्वधारणाओं और पूर्वाग्रहों और दृष्टिकोणों के माध्यम से समझता है जो हम पाठ में लाते हैं।

यह पाठ को समझने और व्याख्या करने के हमारे तरीके को प्रभावित करेगा। ऐसा लगता है कि इमैनुएल कांट को पहले से ही इसकी आशंका थी। और फिर दूसरी विरासत, जैसा कि हमने

पहले ही सुझाया है, सबसे पहले, जब विज्ञान, इतिहास आदि की बात आती है, तो अलौकिक का बहिष्कार होता है।

अलौकिक का बहिष्कार, इतिहास के मामलों में दैवीय हस्तक्षेप का बहिष्कार, जिसका अर्थ है, फिर से, कोई पुनरुत्थान नहीं, पूरे देश को पार करने के लिए लाल सागर का कोई विभाजन नहीं, कोई चमत्कारी घटनाएँ नहीं। और फिर इसके अलावा, इसके संबंध में, कांट की विरासत धर्मशास्त्र-इतिहास विच्छेदन है। यदि पुराने नए नियम के लेखक धर्मशास्त्र लिख रहे हैं, तो उनका इतिहास लिखने या न लिखने से कोई सरोकार नहीं है।

उस सोच का एक हिस्सा कांट के पास जाता है, जिन्होंने इसे चित्रित किया, इतिहास और विज्ञान के बारे में क्या सच था और धर्म और ईश्वर में विश्वास के क्षेत्र में क्या सच था, के बीच इस द्वंद्व के साथ काम किया। जवाब में, मैं कांट के जवाब में सोचता हूँ, जब हम हेर्मेनेयुटिक्स के बारे में सोचते हैं, और तब हम इन व्यक्तियों के योगदान को संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे जिन्हें हमने देखा है, फ्रांसिस बेकन, रेने डेसकार्टेस, जॉन लोके और फिर अंत में इमैनुएल कांट। और जैसा कि मैंने कहा, इस दौरान अन्य व्यक्ति और अन्य लोग भी हैं जिन्होंने व्याख्याशास्त्र में समान रूप से महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

फिर, जानबूझकर व्याख्याशास्त्र के बारे में नहीं सोच रहे हैं, बल्कि सिर्फ इसलिए कि वे इस बात से निपट रहे हैं कि हम कैसे समझते हैं, हम कैसे जानते हैं, चाहे वह वैज्ञानिक डेटा हो या लिखित पाठ, हम कुछ कैसे जानते हैं? उसके कारण, ये व्यक्ति व्याख्याशास्त्र और व्याख्याशास्त्र सिद्धांत में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। लेकिन कुछ और टिप्पणियाँ, विशेष रूप से कांट के बारे में, बल्कि अन्य बेकन और डेसकार्टेस और जॉन लोके के बारे में भी, सबसे पहले, विशेष रूप से कांट ने हमें याद दिलाया है, मुझे लगता है, कि शुद्ध प्रेरण जैसी कोई चीज नहीं है। विशुद्ध वस्तुनिष्ठ दुभाषिया जैसी कोई चीज़ नहीं होती।

एक कठोर पद्धति द्वारा, सही तकनीकों का एक कठोर अनुप्रयोग किसी भी तरह से बाइबिल के पाठ की व्याख्या इस तरह से कर सकता है कि आप बस एक खाली स्लेट हैं जो जानकारी को

सोखने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। और आप पूरी तरह से आश्वस्त हो सकते हैं कि आपकी व्याख्या और पाठ की वस्तु के बीच एक-से-एक संबंध है। इसलिए मुझे लगता है कि हमें यह समझना होगा, और हम इस बारे में और अधिक बात करेंगे, हमें यह समझना होगा कि क्या पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक और वस्तुनिष्ठ व्याख्याकार जैसी कोई चीज नहीं है।

हम सभी अपनी-अपनी समझ, अपनी-अपनी प्रवृत्ति, अपने-अपने पूर्वाग्रहों, अपनी-अपनी पृष्ठभूमि और परंपरा के साथ आते हैं, जो किसी पाठ को पढ़ने के तरीके को प्रभावित करते हैं। अब इस पाठ्यक्रम में हम जिन प्रश्नों से बाद में निपटेंगे उनमें से एक यह है कि क्या यह अनिवार्य रूप से बाइबिल पाठ को पढ़ने के तरीके को विकृत करता है? क्या बाइबिल के पाठ को समझने की कोई आशा नहीं है? क्या हम अनिवार्य रूप से केवल देखने वाले की नज़र में अर्थ रखने के लिए अभिशप्त हैं? किसी पाठ का कोई सही अर्थ नहीं है जिसे हम कभी प्राप्त करने की आशा कर सकें। हम इसके बारे में बाद में, लेकिन निश्चित रूप से बात करेंगे, और हम देखेंगे कि यह व्याख्यात्मक सोच में और भी प्रमुख हो जाएगा, कि शुद्ध कटौती जैसी कोई चीज नहीं है, जहां मैं एक खाली स्लेट के साथ एक वस्तुनिष्ठ पर्यवेक्षक हूँ जो बस भीगने का इंतजार कर रहा हूँ ऊपर या एक सूखा स्पंज जो डेटा को सोखने की प्रतीक्षा कर रहा है, और मैं पूरी तरह से और विशुद्ध रूप से किसी चीज़ को ठीक उसी तरह से समझ सकता हूँ जिस तरह से वह है।

दूसरी प्रतिक्रिया है, कांट के तर्क के प्रकाश में, मुझे लगता है कि ईसाई यह तर्क देना चाहेंगे कि ईश्वर ने हमें अपनी छवि में बनाया है, उत्पत्ति अध्याय 1। ईश्वर ने हमें अपनी छवि में बनाया है, और इसलिए उसने संरचनाओं और श्रेणियों को हमारे अंदर स्थापित किया है मानव मन जो हमें चीजों को उसी तरह समझने में सक्षम बनाता है जिस तरह से भगवान ने उन्हें बनाया है। तो ईश्वर ब्रह्मांड का निर्माता है, और मनुष्य के निर्माता ने अपनी छवि में उन संरचनाओं को उन श्रेणियों में रखा है जिनका कांट ने वर्णन किया है। फिर, हम खाली दिमाग से किसी भी चीज़ पर नहीं पहुँच सकते।

यदि आपने ऐसा किया होता, तो आप कभी भी कुछ भी नहीं समझ पाते, लेकिन ईश्वर ने स्वयं मानव मस्तिष्क में संरचनाएं, श्रेणियां और ग्रिड बनाए हैं जो हमें चीजों को उसी तरह समझने में

सक्षम बनाते हैं जैसे उन्होंने उन्हें बनाया है। लेकिन साथ ही, एक ईसाई दुभाषिया यह स्वीकार करना चाहेगा कि हम पतन और मानवीय पापपूर्णता के कारण इसे पूरी तरह और विस्तृत रूप से नहीं करते हैं। मानवीय पापपूर्णता के कारण, यह चीजों को देखने के हमारे तरीके को प्रभावित करता है।

यह चीजों को समझने के हमारे तरीके को प्रभावित करता है। अब फिर, यह अभी भी सवाल उठाता है, क्या इसका मतलब यह है कि हम अनिवार्य रूप से विफलता के लिए अभिशप्त हैं? क्या इसका मतलब यह है कि हम कुछ भी नहीं समझ सकते? हम उससे बाद में निपटेंगे, लेकिन प्रतिक्रिया के भाग के रूप में, मुझे लगता है कि अधिकांश व्याख्याकार, अधिकांश ईसाई व्याख्याकार, सुझाव देंगे और पहचानेंगे कि भले ही हम किसी चीज़ को पूरी तरह और विस्तृत रूप से नहीं समझ सकते हैं, लेकिन यह हमें किसी चीज़ को पर्याप्त रूप से समझने से नहीं रोकता है। और काफी हद तक. तो, संक्षेप में, इन व्यक्तियों के योगदान को संक्षेप में प्रस्तुत करना, सबसे पहले, कांट और डेसकार्टेस और बेकन और जॉन लॉक की विरासत अनुभववाद और मानवीय कारण पर जोर देना है।

यानी, फिर से, हम वस्तुनिष्ठ रूप से किसी चीज़ की वैसी ही व्याख्या करने में सक्षम हैं जैसी वह है। हम वस्तुनिष्ठ रूप से, मानवीय तर्क का उपयोग करके, कठोर कार्यप्रणाली लागू करके, किसी चीज़ को समझने में सक्षम हैं। कोई कुछ जान पाता है।

बेकन और डेसकार्टेस के अनुसार, मूल रूप से मेरे जानने और किसी चीज़ को जानने के तरीके के बीच एक संबंध था। फिर से, जॉन लॉक के अनुसार, कोई भी व्यक्ति किसी चीज़ को खाली दिमाग से, सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर, किसी चीज़ को वैसी ही समझने में सक्षम हो सकता है जैसे वह वास्तव में थी, फिर से, एक कठोर विधि या कार्यप्रणाली के अनुप्रयोग द्वारा। इस प्रकार के दृष्टिकोण को अक्सर सामान्य ज्ञान यथार्थवाद भी कहा जाता है, यह एक अन्य शब्द या वाक्यांश है जो आपको मिल सकता है।

दूसरे इमैनुएल कांट हैं, हालांकि, उन्होंने खुद को थोड़ा अलग कर लिया, हालांकि उन्होंने अभी भी तर्कवाद और तर्क पर जोर दिया, उन्होंने अर्थ के केंद्र के रूप में स्वायत्त जानने वाले स्वयं, स्वायत्त सोच वाले स्वयं पर अधिक जोर दिया। उन्होंने और भी आगे बढ़ते हुए कहा, इसलिए, हम किसी चीज़ को उस रूप में नहीं जान सकते जैसे वह वास्तव में है। अब, फिर से, कांट के लिए, वह कहने तक नहीं गया, इसलिए, हम कुछ भी नहीं जान सकते हैं, या हर कोई कुछ पूरी तरह से अलग लेकर आता है, लेकिन उसने बस इस बात पर जोर दिया कि मनुष्य पहले से ही श्रेणियों से सुसज्जित हैं और मन की संरचनाएँ।

दिमाग एक ग्रिड है जो डेटा को फ़िल्टर करता है और यह निर्धारित करता है कि हम इसे कैसे एक साथ रखते हैं और हम इसे कैसे समझते हैं। यह संरचना पहले से ही दिमाग में मौजूद है, इसलिए मेरे किसी चीज़ को जानने और वह वास्तव में जिस तरह से है, उसके बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। फिर, मेरे इसे समझने और इसे जानने तथा वस्तुगत रूप से यह वास्तविकता में कैसा है, के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है।

इसलिए, उस दृष्टिकोण से, कांट उस संदेह से पूरी तरह बच नहीं पाए जिसके विरुद्ध उन्होंने तर्क दिया था। तीसरी बात तो बस यह उल्लेख करना है कि, इसलिए, कांट ने बाद की व्याख्यात्मक सोच पर, सोच स्वयं और व्याख्या की वस्तु के बीच विभाजन में, दोनों पर भारी प्रभाव डाला है। अब, बाद में पाठक-उन्मुख दृष्टिकोण की आशा करते हुए, अर्थ के केंद्र के रूप में स्वयं को सोचने पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर देने का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

लेकिन साथ ही, आखिरी वाला, उनकी आस्था और इतिहास का विच्छेदन, या उनके धर्मशास्त्र के इतिहास का विच्छेदन, कि, फिर से, यदि बाइबिल के लेखक धर्मशास्त्र लिख रहे हैं, तो वे अनिवार्य रूप से इतिहास नहीं लिख रहे हैं। तो, प्रबुद्धता के उत्पादों के रूप में उन व्यक्तियों ने हमें मानवीय तर्क, मानवीय तर्कसंगतता, मानवीय सोच, कुछ समझने और जानने में सक्षम होने पर जोर देने की विरासत छोड़ी है। बस थोड़ा सा आगे बढ़ने के लिए, समय में बहुत अधिक नहीं, लेकिन परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में थोड़ा सा, क्या मैं एक और महत्वपूर्ण व्यक्ति के बारे में चर्चा करना

चाहता हूं, वह है फ्रेडरिक श्लेइरमाकर, जो 1768 से 1834 तक जीवित रहे, जो कि इतिहास का प्रारंभिक भाग था। 19 वीं सदी।

श्लेइरमाकर एक जर्मन दार्शनिक और धर्मशास्त्री थे और उन्होंने धर्मशास्त्र, व्याख्याशास्त्र, बाइबिल अध्ययन पर भी अपना प्रभाव छोड़ा। कुछ लोग उन्हें धर्मशास्त्र के पिता, या व्याख्याशास्त्र के पिता के रूप में जानते हैं। और हम श्लेइरमाकर के पास लौटेंगे, मैं यहां उनका संक्षेप में परिचय कराऊंगा, और व्याख्याशास्त्र में उनकी सोच और योगदान के बारे में बात करूंगा।

लेकिन जब हम लेखकीय मंशा पर चर्चा करेंगे तो हम दोबारा उनके पास लौटेंगे। श्लेइरमाकर संभवतः वह प्रमुख व्यक्ति हैं जो लेखकीय मंशा पर चर्चा करते हैं। याद रखें, व्याख्या के लिए लेखक-केंद्रित, तकनीक-केंद्रित और पाठक-केंद्रित दृष्टिकोण।

व्याख्या के मुख्य लक्ष्य के रूप में लेखक के इरादे के जनक के रूप में श्लेइरमाकर के पास जाते हैं। हालाँकि बहुत से लोग आवश्यक रूप से इससे सहमत या सहमत नहीं होंगे कि उन्होंने इसे कैसे अपनाया, और उन्होंने इसे कैसे समझाया, फिर भी अधिकांश लोग उन्हें लेखक के इरादे पर जोर देने के साथ, हेर्मेनेयुटिक्स के जनक के रूप में देखेंगे। जैसा कि मैंने कहा, एक जर्मन दार्शनिक और धर्मशास्त्री होते हुए भी उन्होंने व्याख्याशास्त्र में योगदान दिया।

और श्लेइरमाकर ने प्रबुद्धता युग की अवधि के दौरान और उसके एक बच्चे के रूप में भी लिखा था, जिसमें मानव तर्क की शक्ति, सोचने की शक्ति और वास्तव में कुछ जानने के लिए मानव कारण की क्षमता पर जोर दिया गया था। दूसरे शब्दों में, विश्वास तर्क और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भी था। हालाँकि, दिलचस्प बात यह है कि श्लेइरमाकर ने इस पर, विश्वास और तर्क और विज्ञान पर इस जोर पर प्रतिक्रिया व्यक्त की, और सुझाव दिया कि हम ज्ञान के लिए केवल तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण तक ही सीमित नहीं रह सकते हैं।

लेकिन इसके बजाय, केवल तर्कसंगत सत्य और उस समय की धार्मिक हठधर्मिता के विपरीत, श्लेइरमाकर ने ज्ञान की खोज में रचनात्मकता और अनुभव और धर्मपरायणता पर जोर दिया। दूसरे शब्दों में, उनके लिए हेर्मेनेयुटिक्स मानव विचार और भाषा की प्रकृति पर बारीकी से ध्यान देकर विकसित समझ के सामान्य नियमों का अनुप्रयोग है। अब श्लेइरमाकर के लिए इसका क्या मतलब है, मानव विचार पर उनके जोर, रचनात्मकता पर उनके जोर, आत्मा के अनुभव पर उनके जोर के लिए, उन्होंने सुझाव दिया कि समझ और व्याख्या का मुख्य लक्ष्य बाइबिल के पाठ को समझना, या किसी पाठ को समझना नहीं था, जितना यह एक लेखक को समझना था, या किसी अन्य व्यक्ति को समझना था, वह मानव लेखक है।

ताकि आधुनिक दुभाषिया और पाठ का निर्माण करने वाले लेखक के बीच की खाई को व्याख्याशास्त्र द्वारा दूर किया जा सके। यह हेर्मेनेयुटिक्स ही है जिसने हमें हमारे और मानव लेखक के बीच की दूरी को दूर करने की अनुमति दी है। तो प्राथमिक कार्य, श्लेइरमाकर के अनुसार, प्राथमिक कार्य लेखक के पिछले कार्य को यथासंभव बारीकी से पुनर्निर्माण या पुनरुत्पादन करना था।

दूसरे शब्दों में, श्लेइरमाकर के अनुसार, उन्होंने कहा, हां, हम पाठ के व्याकरण जैसी चीजों को देखते हैं, हम पाठ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखते हैं, हम शब्दों को देखते हैं, लेकिन उनके लिए, व्याख्या मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक थी। और फिर, उनकी कुछ दार्शनिक समझ के कारण, उनके लिए मुख्य लक्ष्य पाठ से परे जाना और लेखक की विचार प्रक्रिया को समझना था, ताकि खुद को लेखक के स्थान पर रखा जा सके। क्योंकि उनके अनुसार, हम मानव लेखक के साथ एक समानता साझा करते हैं।

और इसलिए, हम खुद को लेखक के स्थान पर रखने में सक्षम हैं, लेखक के दिमाग में, हम बाइबिल पाठ लिखने में लेखक के सच्चे इरादे को उजागर करने में सक्षम हैं। तो इसके कारण, श्लेइरमाकर ने इस बात पर जोर देना शुरू कर दिया कि व्याख्याशास्त्र और किसी चीज़ को समझने के लिए सही दृष्टिकोण केवल पाठ का निरीक्षण करना और सही व्याख्या के साथ आना नहीं है, बल्कि उससे आगे बढ़ना और मनोवैज्ञानिक रूप से यह प्रश्न पूछना है कि क्या है लेखक

का अतीत से हटकर कार्य और लेखक क्या करना चाहता था। फ्रेडरिक श्लेइरमाकर की विरासत नंबर एक है, लेखक के इरादे पर जोर।

और हम देखेंगे कि हेर्मेनेयुटिक्स शुरू होता है, हेर्मेनेयुटिक्स लेखक केंद्रित दृष्टिकोण या दृष्टिकोण से शुरू होता है जो पाठ के पीछे जाता है और पाठ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को पुनर्प्राप्त करता है, लेखक का इरादा जो श्लेइरमाकर से शुरू होता है। कई व्याख्यात्मक या कई बाइबिल व्याख्या पाठ्यपुस्तकें जो मैंने पढ़ी हैं, उनकी शब्दावली इसी के समान है। व्याख्या का मुख्य लक्ष्य स्वयं को लेखक के स्थान पर रखना है, जो वास्तव में एक व्याख्याशास्त्र पाठ्यपुस्तक के सटीक उद्धरण के करीब है जिसके बारे में मैं जानता हूँ।

ताकि पाठ तब लेखक को समझने, लेखक के इरादे को फिर से बनाने के लिए एक खिड़की बन जाए। और फिर, आज, आज भी वहाँ अभी भी, हालाँकि हम इसे श्लेइरमाकर से अलग तरीके से कर सकते हैं, फिर भी अधिकांश व्याख्याकार, विशेष रूप से इंजील व्याख्याकार, यह तर्क देना जारी रखेंगे कि व्याख्या का मुख्य लक्ष्य लेखक के इरादे को उजागर करना है। मुख्य, पाठ का अर्थ वह अर्थ है जो लेखक ने चाहा है।

और फिर, हम बाद में उस पर लौटेंगे जब हम व्याख्या के लिए लेखक, पाठ और पाठक केंद्रित दृष्टिकोण के बारे में बात करना शुरू करेंगे। लेकिन पहले से ही फ्रेडरिक श्लेइरमाकर ने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया है कि व्याख्या का लक्ष्य लेखक के इरादे को पुनः प्राप्त करना है। श्लेइरमाकर की सोच का एक अन्य पहलू जिसने व्याख्याशास्त्र को प्रभावित किया है, उसे अक्सर व्याख्यात्मक चक्र के रूप में जाना जाता है।

और श्लेइरमाकर ने कहा कि किसी पाठ को पढ़ते समय, व्यक्ति अलग-अलग हिस्सों को समझकर संपूर्ण को समझने की कोशिश करता है। और इसी तरह, अलग-अलग हिस्सों को समझकर, कोई संपूर्णता को समझ सकता है, या कोई संपूर्ण को समझ सकता है। इसे कहने का एक और तरीका है, श्लेइरमाकर के अनुसार, यह समझना कि जो कुछ चरणों में आता है, एक बार में नहीं।

जैसे-जैसे कोई इस चक्र के माध्यम से काम करता है, संपूर्ण और भागों के बीच आगे-पीछे होता है, समझ चरणों में आती है। किसी पाठ के बारे में लेखक के इरादे की समझ चरणों में आती है, एक बार में नहीं। इसलिए हमने विशेष रूप से, उनमें से सभी पर नहीं, बल्कि जानने और समझने के लिए विशेष रूप से गैर-बाइबिल दृष्टिकोणों पर ध्यान दिया है, जिन्होंने व्याख्याशास्त्र को प्रभावित किया है।

फिर से, फ्रांसिस बेकन और उनकी आगमनात्मक वैज्ञानिक पद्धति, रेने डेसकार्टेस और उनके तर्कवाद और वैज्ञानिक पद्धति पर वापस जा रहे हैं, और तर्कसंगत सोच के माध्यम से कुछ जानने की क्षमता पर जोर देते हैं, स्वायत्त सोच वाले स्वयं, जॉन लॉक, जिन्होंने सुझाव दिया कि हम किसी चीज़ को एक के रूप में देख सकते हैं खाली स्लेट, जैसे कि बस चीजों का अवलोकन करना, और खाली स्लेट को संवेदी धारणा और डेटा के साथ अनुभव से भरना। और फिर इमैनुएल कांट के पास, जिन्होंने तर्कसंगत सोच वाले स्वयं, स्वायत्त सोच वाले स्वयं, इन सभी, आत्मज्ञान की संतानों पर भी जोर दिया। फिर भी, एक ही समय में, कांट स्वायत्त सोच का परिचय देता है, अब इस प्रभाव के साथ कि किसी चीज़ के बारे में हमारी जानकारी फ़िल्टर की जाती है और मानव मन में पहले से मौजूद श्रेणियों और संरचनाओं पर निर्भर होती है।

और फिर श्लेइरमाकर, फ्रेडरिक श्लेइरमाकर, जो अब सिर्फ मानवीय तर्क और वैज्ञानिक पद्धति पर प्रतिक्रिया करते हुए जोर देना शुरू करते हैं, अब अनुभव और धर्मपरायणता और रचनात्मकता पर जोर देते हैं। और इसलिए कि व्याख्या का लक्ष्य, हेर्मेनेयुटिक्स का लक्ष्य, अब पाठ के पीछे लेखक के इरादे को मनोवैज्ञानिक रूप से पुनर्प्राप्त करना है, लेखक की विचार प्रक्रिया और लेखक की विचार प्रक्रिया और लेखक की सोच को समझना है। और ये सभी, फिर भी, आज भी व्याख्याशास्त्र के बारे में हमारे दृष्टिकोण और सोचने के तरीके को प्रभावित करते हैं।

और फिर, यह समझना महत्वपूर्ण है कि हेर्मेनेयुटिक्स के प्रति हमारा दृष्टिकोण न केवल बाइबिल के व्याख्याकारों से प्रभावित होता है, बल्कि आम तौर पर धाराओं और ऐतिहासिक आंदोलनों से

प्रभावित होता है और वे इस बात से कैसे जूझते हैं कि हम किसी चीज़ को कैसे जानते हैं, हम कैसे समझते हैं, हम बाहरी चीज़ों को कैसे समझते हैं दुनिया, हम पाठ जैसी किसी चीज़ को कैसे समझते हैं। इन सभी ने हमारी व्याख्यात्मक पाठ्यपुस्तकों और बाइबिल की व्याख्या के बारे में हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित किया है। अगले सत्र में, हम आगे बढ़ेंगे, हम 17वीं, 18वीं और 19वीं शताब्दी में ज्ञानोदय के हिस्से के रूप में इन आंकड़ों से आगे बढ़ेंगे।

और हम आगे बढ़ेंगे और धर्मशास्त्र और दर्शन और हेर्मेनेयुटिक्स के संबंध में कुछ और हालिया विचारकों को देखना शुरू करेंगे और यह बाइबिल के पाठ को देखने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित करता है। और अगले सत्र में, हम एक ऐसे व्यक्ति की जांच से शुरुआत करेंगे जो संभवतः सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक है, हंस- गुर्ग गैडामेर। तो अगले सत्र में, हम हमारी व्याख्यात्मक जड़ों पर नज़र डालना जारी रखेंगे, कुछ ऐसे प्रभाव जिन्होंने आज पुराने नए नियम की बाइबिल व्याख्या के बारे में हमारे सोचने के तरीके को आकार दिया है।